रामायणे आरण्यकांडप्रा
रंभस्तत्सर्गाणि २८ ॥

आ॰ १

श्रीगणेशायनमः॥श्लोक॥ मूलंधर्मतरोर्विवेकजलधेःपूर्णेंदुमानंददं॥वैराग्यांबुज
भास्करंह्यघघनध्वांतापहंतापहं॥मोहांभोधरपूगपाटनविधौस्वःसंभवंशंकरं॥वंदे
ब्रह्मकुलंकलंकशमनंश्रीरामभूपप्रियं॥१॥सांद्रानंदपयोदसौभगतनुंपीतांबरंसुंद
रं॥पाणौबाणशरासनंकटिलसत्तूणीरभारंवरं॥राजीवायतलोचनंधृतजटाजूटेन
संशोभितं॥सीतालक्ष्मणसंयुतंपथिगतंरामाभिरामंभजे॥२॥सोरठा॥ उमारामगुन
गूढपंडितमुनिपावहिंबिरति॥पावहिंमोहबिमूढजेहरिबिमुखनधर्मरति॥चौपाई॥
पुरनरभरतप्रीतिमैगाई॥मतिअनुरूपअनूपसोहाई॥अबप्रभुचरितसुनहुअतिपाव
न॥करतजेबनसुरनरमुनिभावन॥एकबारचुनिकुसुमसुहाए॥निजकरभूषनरामब
नाए॥सीतहिपहिराएप्रभुसादर॥बैठेफटिकसिलापरसुंदर॥सुरपतिसुतधरिबायस १

वेषा॥सठचाहतरघुपतिवलदेषा॥जिमिपिपीलिकासागरथाहा॥महामंदमतिपाव
नचाहा॥सीताचरनचोंचहतिभागा॥मूढमंदमतिकारनकागा॥चलारुधिररघुनायक
जाना॥सींकधनुसायकसंधाना॥दोहा॥अतिक्रपालरघुनायकसदादीनपरनेह॥
तासनआइकीन्हछलुमूरखअवगुनगेह॥१॥प्रेरितमंत्रब्रह्मसरधावा॥चलाभाजि
वायसभयपावा॥धरिनिजरूपगयउपितुपाहीं॥रामविमुषराषातेहिनाहीं॥भानि
रासउपजीमनत्रासा॥यथाचक्रभयरिषिदुर्वासा॥ब्रह्मधामशिवपुरसवलोका॥फिरा
श्रमितब्याकुलभयशोका॥काहूंबैठनकहानवोही॥राषिकोसकैरामकरद्रोही॥मा
तुम्रत्युपितुसमनसमाना॥सुधाहोइविषसुनुहरिजाना॥मित्रकरैसतरिपुकैकरनी॥
ताकहविवुधनदीवैतरनी॥सवजगताहिअनलहुतेताता॥जोरघुवीरविमुषसुनुभ्रा

आ०
२

ता ॥ नारद देषा बिकल जयंता ॥ लागि दया कोमल चित संता ॥ पठवा तुरत राम पहि ताही ॥
कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही ॥ आतुर सभय गहेसि पद जाई ॥ त्राहि त्राहि दयाल रघुरा
ई ॥ अतुलित बल अतुलित प्रभुताई ॥ मै मतिमंद जानि नहि पाई ॥ निज क्रत कर्म जनित
फल पायउं ॥ अब प्रभु पाहि सरन तकि आयउं ॥ सुनि क्रपाल अति आरत बानी ॥ एक नय
न करि तजा भवानी ॥ सोरठा ॥ कीन्ह मोह बस द्रोह जद्यपि तेहि कर बध उचित ॥ प्रभु
छाडेउ करि छोह को क्रपाल रघुबीर सम ॥ २ ॥ रघुपति चित्रकूट बसि नाना ॥ चरित किए श्रु
ति सुधा समाना ॥ बहुरि राम अस मन अनुमाना ॥ होइहि भीर सबहि मोहि जाना ॥ सकल
मुनिन्ह सन बिदा कराई ॥ सीता सहित चले द्वौ भाई ॥ अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ ॥ २
सुनत महामुनि हर्षित भयऊ ॥ पुलकित गात अत्रि उठि धाए ॥ देषि राम आतुर चलि

आरं॥ करत दंडवत मुनि उरलास॥ प्रेमवारि द्वौ जन अन्हवाए॥ देखि राम छबि नैन जु

डाने॥ सादर निज आश्रम तब आने॥ करि पूजा कहि वचन सुहाए॥ दिए मूल फल प्रभु

मन भाए॥ सोरठा॥ प्रभु आसन आसीन भरि लोचन सोभा निरखि॥ मुनिवर परम प्रवी

न जोरि पानि अस्तुति करत॥१॥ नाराच रूपिणी छंद॥ नमामि भक्त वत्सलं॥ कृपालु सील

कोमलं॥ भजामि ते पदांवुजं॥ अकामिनां स्वधाम दं॥१॥ निकाम स्याम सुंदरं॥ भवांवुना

थ मंदरं॥ प्रफुल्ल कंज लोचनं॥ मदादि दोष मोचनं॥२॥ प्रलंब बाहु विक्रमं॥ प्रभोप्र

मेय वैभवं॥ निषंग चाप सायकं॥ धरं त्रिलोक नायकं॥३॥ दिनेस वंस मंडनं॥ महेस चा

प खंडनं॥ मुनींद्र संत रंजनं॥ सुरारि वृंद भंजनं॥४॥ मनोज वैरि वंदितं॥ अजादि देव सेवि

तं॥ विसुद्ध बोध विग्रहं॥ समस्त दूषनापहं॥५॥ नमामि इंदिरा पतिं॥ सुखाकरं सतां गतिं

आ० भजेसशक्तिसानुजं॥शचीपतिप्रियानुजं॥६॥त्वदंघ्रिमूलजेनराः॥भजंतिहीनमत्सराः
३ पतंतिनोभवार्णवे॥वितर्कवीचिसंकुले॥७॥विविक्तवासिनःसदा॥भजंतिमुक्तयेमुदा
निरस्यइंद्रियादिकं॥प्रयांतितेगतिंस्वकं॥८॥तमेकमद्भुतंप्रभुं॥निरीहमीश्वरंविभुं॥
जगद्गुरुंचशाश्वतं॥तुरीयमेवकेवलं॥९॥भजामिभाववल्लभं॥कुयोगिनांसुदुर्लभं
स्वभक्तकल्पपादपं॥समंसुसेव्यमन्वहं॥अनूपरूपभूपतिं॥नतोहमुर्विजापतिं॥प्रसीद
मेनमामिते॥पदाब्जभक्तिदेहिमे॥११॥पठंतियेस्तवंइदं॥नरादरेणतेपदं॥व्रजंतिनात्रसं
शयः॥त्वदीयभक्तिसंयुताः॥१२॥दोहा॥ बिनतीकरिमुनिनाइसिरकहकरजोरिबहो
रि॥चरनसरोरुहनाथजनिकबहुतजैमतिमोरि॥४॥अनुसूयाकेपदगहिसीता॥मि रा
लीबहोरिसुसीलबिनीता॥रिषिपतनीमनसुखअधिकाई॥आसिषदेइनिकटबैठाई॥

दिव्यबसनभूषनपहिराए॥ जेनितनूतनअमलसुहाए॥ कहरिषिबधूसरसमृदु
बानी॥ नारिधर्मकछुब्याजबखानी॥ मातुपिताभ्राताहितकारी॥ मितप्रदसबसुनुरा
जकुमारी॥ अमितदानिभर्ताबैदेही॥ अधमसुनारिजोसेवनतेही॥ धीरजधर्ममित्रअ
रुनारी॥ आपदकालपरिखिअहिंचारी॥ बृद्धरोगबसजडधनहीना॥ अंधबधिरक्रो
धीअतिदीना॥ ऐसेहुपतिकरकिएअपमाना॥ नारिपावजमपुरदुखनाना॥ ऐकैधर्म
एकब्रतनेमा॥ कायबचनमनपतिपदप्रेमा॥ जगपतिब्रताचारिबिधिअहहीं॥ बेदपु
रानसंतसबकहहीं॥ उत्तमकेअसबसमनमाहीं॥ सपनेहुआनपुरुषजगनाहीं॥ म
ध्यमपरपतिदेखैकैसे॥ भ्रातापितापुत्रनिजजैसे॥ धर्मबिचारिसमुझिकुलरहई॥ सो
निकिष्टत्रियश्रुतिअसकहई॥ बिनुअवसरभयतेरहजोई॥ जानेहुअधमनारिजग

आ॰ सोई॥ पतिवंचकपरपतिरतिकरई॥ रौरवनरककल्पसतपरई॥ छनसुषलागिजन्म
५ सतकोटी॥ दुषनसमुझतेहिसमकोषोटी॥ विनुश्रमनारिपरमगतिलहई॥ पतिव्रतध
र्मछाडिछलगहई॥ पतिप्रतिकूलजन्मजहंजाई॥ विधवाहोइपाइतरुनाई॥ सोर॰
ठा॥ सहजअपावनिनारिपतिसेवतसुभगतिलहै॥ जसुगावतश्रुतिचारिअजहुतुल॰
सिकाहरिहिप्रिय॥ सुनुसीतातवनामसुमिरिनारिपतिव्रतकरहिं॥ तोहिप्रानप्रियरा
मकहेउंकथासंसारहित॥ ५॥ सुनिजानकीपरमसुषपावा॥ सादरतासुचरनसिरुना
वा॥ तवमुनिसनकहकृपानिधाना॥ आयसुहोइजाउंवनआना॥ संततमोपरकृपाक
रेहू॥ सेवकजानितजेहुजनिनेहू॥ धर्मधुरंधरप्रभुकैवानी॥ सुनिसप्रेमवोलेमुनिज्ञानी॥ ५
जासुकृपाअजशिवसनकादी॥ चहतसकलपरमारथवादी॥ तेतुम्हरामअकामपि

आरे॥ दीनवंधु म्रदु वचन उचारे॥ अवज्ञानी मैं श्री चतुराई॥ भजिय तुम्हहि सव देव वि
हाई॥ जेहि समान अतिसै नहि कोई॥ ताकर सील कस न अस होई॥ केहि विधि कहौं जाहु
अव स्वामी॥ कहहु नाथ तुम्ह अंतरजामी॥ अस कहि प्रभु विलोकि मुनि धीरा॥ लोचन
जल वह पुलक सरीरा॥ छंद॥ तन पुलक निर्भर प्रेम पूरन नैन मुख पंकज दिये॥ मन
ज्ञान गुन गोतीत प्रभु मैं दीख जप तप का किये॥ जप जोग धर्म समूह ते नर भक्ति अनुप
म पावहीं॥ रघुवीर चरित पुनीत निसिदिन दास तुलसी गावहीं॥ दोहा॥ कलिमल स
मन दमन मन राम सुजस सुखमूल॥ सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल
सोरठा॥ कठिन काल मल कोस धर्म न ज्ञान न जोग जप॥ परिहरि सकल भरोस रामु
हि भजहिं ते चतुर नर॥ ६॥ मुनि पद कमल नाइ करि सीसा॥ चले वनहि सुर नर मुनि ईसा

सा॥ आगे राम अनुज पुनि पाछे॥ मुनि वर वेष वने अति काछे॥ उभय वीच श्री सोहइ कै
सी॥ व्रह्म जीव विच माया जैसी॥ सरिता वन गिरि अवघट घाटा॥ पति पहिचानि देहिं वर
वाटा॥ जहँ जहँ जाहिं देव रघुराया॥ करहिं मेघ तहँ तहँ नभ छाया॥ मिला असुर विराध
मग जाता॥ आवत ही रघुवीर निपाता॥ तुरतहिं रुचिर रूप तेहिं पावा॥ देषि दुषी निज धा
म पठावा॥ पुनि आए जहँ मुनि सरभंगा॥ सुंदर अनुज जानकी संगा॥ दोहा॥ देषि राम
मुष पंकज मुनि वर लोचन भृंग॥ सादर पान करत अति धन्य जन्म सरभंग॥ ७॥ कह
मुनि सुनु रघुवीर कृपाला॥ संकर मानस राजमराला॥ जात रहेउँ विरंचि के धामा॥ सुने
उँ श्रवन वन ऐहहिं रामा॥ चितवत पंथ रहेउँ दिन राती॥ अव प्रभु देषि जुडानी छाती
नाथ सकल साधन मैं हीना॥ कीन्ही कृपा जानि जन दीना॥ सो कछु देव न मोहि निहो

रा॥ निजपनराषेउजनमनचोरा॥ तवलगिरहहुदीनहितलागी॥ जवलगिमिलौतुम्ह
हितनुत्यागी॥ जोगजग्यजपतपव्रतकीन्हा॥ प्रभुकहंदेइभगतिवरलीन्हा॥ एहिविधि
सररचिमुनिसरभंगा॥ वैठेहृदयछाडिसवसंगा॥ दोहा॥ सीताअनुजसमेतप्रभुनील
जलदतनस्याम॥ ममहियवसहुनिरंतरसगुनरूपश्रीराम॥ ८॥ असकहिजोगअगिनि
तनुजारा॥ रामकृपावैकुंठसिधारा॥ तातेमुनिहरिलीननभएऊ॥ प्रथमहिंभेदभगति
वरलएऊ॥ रिषिनिकायमुनिवरगतिदेषी॥ सुषीभएनिजहृदयविशेषी॥ अस्तुतिकर
हिसकलमुनिवृंदा॥ जयतिप्रनतहितकरुनाकंदा॥ पुनिरघुनाथचलेवनआगे॥ मुनि
वृंदविपुलसंगलागे॥ अस्थिसमूहदेषिरघुराया॥ पूछीमुनिन्हलागिअतिदाया॥
जानतहूंपूछिअकसस्वामी॥ सवदरसीतुम्हअंतरजामी॥ निसिचरनिकरसकलमुनि

आ०

षाए॥सुनिरघुबीरनयनजलछाए॥दोहा॥निसिचरहीनकरौंमहिभुजउठाइपनकी
न्ह॥सकलमुनिन्हकेआश्रमहिजाइजाइसुषदीन्ह॥९॥मुनिअगस्तिकरसिष्य
सुजाना॥नामसुतीछनरतिभगवाना॥मनक्रमबचनरामपदसेवक॥सपनेहुआन
भरोसनदेवक॥प्रभुआगमनश्रवनसुनिपावा॥करतमनोरथआतुरधावा॥हेबिधि
दीनबंधुरघुराया॥मोसेसठपरकरिहहिदाया॥सहितअनुजमोहिरामगुसांई॥मि
लिहहिनिजसेवककीनांई॥मोरेजियभरोसदृढनाहीं॥भगतिबिरतिनज्ञानमनमाहीं
नहिसतसंगजोगजपजागा॥नहिदृढचरनकमलअनुरागा॥एकबानिकरुनानि
धानकी॥सोप्रियजाकेगतिनआनकी॥होइहिसुफलआजुममलोचन॥देषिबद
नपंकजभवमोचन॥निर्भरप्रेममगनमुनिज्ञानी॥कहिनजाइसोदसाभवानी॥दि

सिअरुबिदिसिपंथनहिसूझा॥कोमैचलेउंकहांनहिबूझा॥कबहुकफिरिपाछे
पुनिजाई॥कबहुकनृत्यकरैगुनगाई॥अबिरलप्रेमभगतिमुनिपाई॥प्रभुदेषहि
तरुओटलुकाई॥अतिसैप्रीतिदेषिरघुबीरा॥प्रगटेहृदयहरनभवभीरा॥मुनिमग
मांझअचलहोइबैसा॥पुलकसरीरपनसफलजैसा॥तबरघुनाथनिकटचलिआए
देषिदसानिजजनमनभाए॥मुनिहिरामबहुभांतिजगावा॥जागनध्यानजनितसु
षपावा॥भूपरूपतबरामदुरावा॥हृदयचतुर्भुजरूपदेषावा॥मुनिअकुलाइउठा
पुनिकैसे॥बिकलहीनमनिफनिबरजैसे॥आगेदेषिरामतनस्यामा॥सीताअनुज
सहितसुषधामा॥परेउलकुटइवचरननिहिलागी॥प्रेममगनमुनिबरबडभागी॥भु
जबिसालगहिलिएउठाई॥परमप्रीतिराषेउरलाई॥मुनिहिमिलतअससोहकृ

श्रा० पाला॥ कनककतरु हि जिमि भेटत माला॥ रामवदन विलोकि मुनि ठाढा॥ मानहु चित्र
७ मांझ लिखि काढा॥ दोहा॥ तव मुनि हृदय धीर धरि गहि पद वारहि वार॥ निज आश्रम प्र
भु आनि करि पूजा विविध प्रकार॥१०॥ कह मुनि प्रभु सुनु विनती मोरी॥ अस्तुति करौं
कवन विधि तोरी॥ महिमा अमित मोरि मति थोरी॥ रवि सन्मुष षद्योत अंजोरी॥ स्याम
तामरस दाम सरीरं॥ जटा मुकुट परिधन मुनि चीरं॥ पानि चाप सर कटि तूनीरं॥ नौमि
निरंतर श्री रघुवीरं॥ मोह विपिन घन दहन कृसानु॥ संत सरोरुह कानन भानु॥ निसि
चर करि वरूथ मृगराजं॥ त्रातु सदा नो भव षग बाजं॥ अरुन नयन राजीव सुवेसं॥ सी
ता नयन चकोर निसेसं॥ हर हृदि मानस बाल मरालं॥ नौमि राम उर बाहु विशालं॥ संस ७
यसर्प ग्रसन उरगादं॥ समन सुकर्कस तर्क विषादं॥ भय भंजन रंजन सुर यूथं॥ त्रा

तुमसदानोहिपावनस्थं॥ निर्गुनसगुनविषमसमरूपं॥ ज्ञानगिरागोतीतमरूपं॥ अमलम
खिलमनवद्यमपारं॥ नौमिरामभंजनमहिभारं॥ भक्तकल्पपादपआरामं॥ तर्जनक्रो
धलोभमदकामं॥ अतिनागरभवसागरसेतुं॥ त्रातुसदादिनकरकुलकेतुं॥ अतुलितभु
जप्रतापबलधामं॥ कलिमलविपुलविभंजननामं॥ धर्मवर्मनर्मदगुनग्रामं॥ संतत
संतनोतुममरामं॥ जदपिविरजव्यापकअविनासी॥ सवकेहृदयनिरंतरवासी॥ तद
पिअनुजश्रीसहितखरारी॥ वसतुमनसिममकाननचारी॥ जेजानहिंतेजानहुस्वामी॥
सगुनअगुनउरअंतरजामी॥ जोकोसलपतिराजिवनैना॥ करौसोरामहृदयममऐ
ना॥ असअभिमानजाइजनिभोरे॥ मैसेवकरघुपतिपतिमोरे॥ सुनिमुनिवचनराम
मनभाए॥ वहुरिहरषिमुनिवरउरलाए॥ परमप्रसन्नजानुमुनिमोही॥ जोवरमागहु

आ०
८
देउँ सो नो ही॥ मुनि कहै मैं बर कबहुँ न जाचा॥ समुझि न परै झूठ का साचा॥ तुम्हहि नीक
लागै रघुराई॥ सो मोहि देव दास सुषदाई॥ अबिरल भक्ति बिरति बिज्ञाना॥ होहु सक
ल गुन ज्ञान निधाना॥ प्रभु जो दीन्ह सो बरु मै पावा॥ अब सो देहु मोहि जो भावा॥ दोहा
अनुज जानकी सहित प्रभु चाप बान धर राम॥ मम हिय गगन इंदु इव बसहु सदा
निःकाम॥११॥ एवमस्तु करि रमानिवासा॥ हरषि चले कुंभज रिषि पासा॥ बहुत दि
वस गुर दरसन पाए॥ भए मोहि यहु आश्रमु आए॥ अब प्रभु संग जाउँ गुर पाहीं॥ तु
म्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं॥ देषि कृपानिधि मुनि चतुराई॥ लिए संग बिहसे द्वौ भाई॥
पंथ कहत निज भगति अनूपा॥ मुनि आश्रम पहुचे सुरभूपा॥ तुरत सुतीक्षन गुर पहि ८
गए उ॥ करि दंडवत कहत अस भए उ॥ नाथ कोसलाधीस कुमारा॥ आए मिलन ज

गतआधारा॥रामअनुजसमेतवैदेही॥निसिदिनुदेवजपतहहुजेही॥सुनतअगस्ति
तुरतउठिधाए॥हरिबिलोकिलोचनजलछाए॥मुनिपदकमलपरेद्वौभाई॥रिषि
अतिप्रीतिलिएउरलाई॥सादरकुसलपूछिमुनिज्ञानी॥आसनबरबैठारेआनी॥पु
निकरिबहुप्रकारप्रभुपूजा॥मोहिसमभाग्यवंतनहिदूजा॥जहँलगिरहेअपरमु
निबृंदा॥हरषेसबबिलोकिसुषकंदा॥दोहा॥मुनिसमूहमहँबैठेसन्मुषसबकीओ
र॥सरदइंदुतनचितवतमानहुनिकरचकोर॥१२॥तबरघुबीरकहामुनिपाहीं॥तु
म्हसनप्रभुदुराउकछुनाहीं॥तुम्हजानहुजेहिकारनआयउँ॥तातेतातनकहिसमुझा
यउँ॥अबसोमंत्रदेहुप्रभुमोही॥जेहिप्रकारमारौंमुनिद्रोही॥मुनिमुसुकानेसुनिप्र
भुबानी॥पूछेहुनाथमोहिकाजानी॥तुम्हरेभजनप्रभावअघारी॥जानौंमहिमाक

आ० ९ छुक तुम्हारी॥ उमरि तरु बिसाल तव माया॥ फल ब्रह्मांड अनेक निकाया॥ जीव च
राचर जंतु समाना॥ भीतर बसहिं न जानहिं आना॥ ते फल भच्छक कठिन कराला॥
तव भय डरत सदा सोउ काला॥ ते तुम्ह सकल लोकपति साईं॥ पूछेहु मोहि मनुज
की नाईं॥ यह बर मागौं कृपानिकेता॥ बसहु हृदय श्री अनुज समेता॥ अबिरलि भग
ति बिरति सतसंगा॥ चरन सरोरुह प्रीति अभंगा॥ जद्यपि ब्रह्म अखंड अनंता॥ अनुभ
व गम्य भजहिं जेहि संता॥ अस तव रूप बखानौ जानौ॥ फिरि फिरि सगुन ब्रह्म रति मा
नौ॥ संतत दासन्ह देहु बड़ाई॥ ताते मोहि पूछेहु रघुराई॥ है प्रभु परम मनोहर ठाऊँ,
पावन पंचबटी तेहि नाऊँ,॥ दंडक बन पुनीत प्रभु करहू॥ उग्र साप मुनिबर के हर ९
हू॥ बास करहु तहँ रघुकुलराया॥ कीजै सकल मुनिन्ह पर दाया॥ चले राम मुनि आय

सुपाई॥तुरतहिपंचवटीनियराई॥दोहा॥:गीधराजसेंभेंटभइबहुविधिप्रीतिवढा
इ॥गोदावरीनिकटप्रभुरहेपर्नगृहछाइ॥१३॥जबतेरामकीन्हतहंवासा॥सुखीभए
मुनिबीतीत्रासा॥गिरिवननदीतालछविछाए॥दिनदिनप्रतिअतिहोहिसुहाए॥
खगमृगवृंदअनंदितरहहीं॥मधुपमधुरगुंजतछविलहहीं॥सोवनवरनिनसक
अहिराजा॥जहांप्रगटरघुवीरविराजा॥एकवारप्रभुसुखआसीना॥लछिमनवचन
कहेछलहीना॥सुरनरमुनिसचराचरसाईं॥मैपूछौनिजप्रभुकीनाई॥मोहिसमु
झाइकहहुसोइदेवा॥सबतजिकरौंचरनरजसेवा॥कहहुग्यानविरागअरुमाया॥कह
हुसोभगतिकरहुजेहिदाया॥दोहा॥:ईश्वरजीवहिभेदप्रभुसकलकहहुसमुझाइ
जातेहोइचरनरतिसोकमोहभ्रमजाइ॥१४॥थोरेमहंसबकहौंवुझाई॥सुनहुतातम

आ० १० तिमनचितुलाई॥ मैअरुमोरतोरतैमाया॥ जेहिवसकीन्हेजीवनिकाया॥ गोगोचरजहँ
लगिमनजाई॥ सोसवमायाजानेहुभाई॥ तेहिकरभेदसुनहुतुम्हसोऊ॥ विद्याअपर
अविद्यादोऊ॥ एकदुष्टअतिसयदुषरूपा॥ जावसजीवपराभवकूपा॥ एकरचैजगगुनव
सजाकें॥ प्रभुप्रेरितनहिंनिजवलताकें॥ ज्ञानमानजहँएकोनाहीं॥ देषतब्रह्मसमानस
वमाहीं॥ कहियतातसोपरमविरागी॥ त्रणसमसिद्धितीनिगुनत्यागी॥ दोहा॥ मायाईस
नआपुकहँजानकहियसोजीव॥ वंधमोक्षप्रदसर्वपरमायाप्रेरकसीव॥१५॥ धर्मतेविरति
जोगतेज्ञाना॥ ज्ञानमोक्षप्रदवेदवषाना॥ जातेवेगिद्रवौमैभाई॥ सोममभगतिभगतसु
षदाई॥ सोस्वतंत्रअवलंबनआना॥ तेहिआधीनज्ञानविज्ञाना॥ भगतितातअनुपमसु १०
षमूला॥ मिलइजोसंतहोइअनुकूला॥ भगतिकिसाधनकहौंवषानी॥ सुगमपंथमो

हि पावहि प्रानी ॥ प्रथमहि विप्र चरन अति प्रीती ॥ निज निज कर्म निरत श्रुति रीती ॥
यह कर फल पुनि विषय विरागा ॥ तव मम धर्म उपज अनुरागा ॥ श्रवनादिक नव भ
गति दृढाही ॥ मम लीला रति अति मन माही ॥ संत चरन पंकज अति प्रेमा ॥ मन क्रम
वचन भजन दृढ नेमा ॥ गुरु पितु मातु बंधु पति देवा ॥ सव मोहि कहं जानै दृढ सेवा ॥ म
म गुन गावत पुलक सरीरा ॥ गदगद गिरा नैन वह नीरा ॥ काम आदि मद दंभ न जाके
तात निरंतर वस मै ताके ॥ दोहा ॥ वचन कर्म मन मोरि गति भजनु करहि निःकाम ॥ ति
न्ह के हृदय कमल महं करौं सदा विश्राम ॥ १६ ॥ भगति जोग सुनि अति सुष पावा ॥ ल
छिमन प्रभु चरनन्हि सिरु नावा ॥ एहि विधि गए कछुक दिन वीती ॥ कहत विराग ग्या
न गुन नीती ॥ सूपनखा रावन कै वहिनी ॥ दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ॥ पंचवटी

श्रा० ल१ सोगैएकवारा॥देखिविकलभइजुगलकुमारा॥भ्रातापितापुत्रउरगारी॥पुरुषमनोहर
११ निरखतनारी॥होइविकलसकमनहिनरोकी॥जिमिरविमनिद्रवरविहिविलोकी॥
रुचिररूपधरिप्रभुपहिंजाई॥वोलीवचनवहुतमुसकाई॥तुम्हसमपुरुषनमोसम
नारी॥यहसंजोगविधिरचाविचारी॥ममअनुरूपपुरुषजगमाहीं॥देखेउँखोजिलोक
तिहुनाहीं॥तातेअवलगिरहिउँकुमारी॥मनमानाकछुतुम्हहिनिहारी॥सीतहिचि
तैकहीप्रभुवाता॥अहैकुआरमोरलघुभ्राता॥गइलछिमनरिपुभगिनीजानी॥प्रभु
विलोकिवोलेमृदुवानी॥सुंदरिसुनुमैंउन्हकरदासा॥पराधीननहितोरसुपासा॥प्रभु न
समर्थकोसलपुरराजा॥जोकछुकरहिंउन्हहिसवछाजा॥सेवकसुखचहमानभिखा ११
री॥व्यसनीधनसुभगतिविभचारी॥लोभीजसचहचारगुमानी॥नभदुहिदूधचहत

रप्रानी॥पुनिफिरिरामनिकटसोआई॥प्रभुलछिमनपहिंबहुरिपठाई॥लछिमन
कहातोहिसोबरई॥जोत्रनतोरिलाजपरिहरई॥तबखिसिआनिरामपहिंगई॥रूपभयं
करप्रगटतभई॥सीतहिसभयदेखिरघुराई॥कहाअनुजसनसैनबुझाई॥दोहा॥लछि
मनअतिलाघवँसोनाककानबिनुकीन्हि॥ताकेकररावनकहँमनौचुनौतीदीन्हि॥१७
नाककानबिनुभइबिकरारा॥जनुश्रवसैलगेरकेधारा॥खरदूखनपहिंगोबिलपाता॥
धिगधिगतवपौरुषबलभ्राता॥तेहिंपूछासबकहेसिबुझाई॥जातुधानसुनिसेनबना
ई॥धाएनिसिचरनिकरबरूथा॥जनुसपक्षकज्जलगिरिजूथा॥नानावाहननानाका
रा॥नानायुधधरघोरअपारा॥सूपनखाआगेकरिलीनी॥असुभरूपश्रुतिनासाहीनी॥
असगुनअमितहोहिंभयकारी॥गनहिंनमृत्युबिबससबझारी॥गर्जहिंतर्जहिंगगन

अ॰ १२ उड़ाहीं॥ देषि कटकु भट अति बहु ताहीं॥ कोउ कह जियत धरहु दोउ भाई॥ धरि मारहु ति
य लेहु छड़ाई॥ धूरि पूरि नभ मंडल रहा॥ राम बोलाइ अनुज सन कहा॥ लै जानकिहि जा
हु गिरि कंदर॥ आवा निसिचर कटकु भयंकर॥ रहेहु सजग सुनि प्रभु कै बानी॥ चले स
हित श्री सर धनु पानी॥ देषि राम रिपु दल चलि आवा॥ बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा॥
छंद॥:॥ कोदंड कठिन चढ़ाइ सिर जटजूट बांधत सोह क्यौं॥ मरकत सैल पर लरत दामि
नि कोटि सो जुग भुजग ज्यौं॥ कटि कसि निषंग बिसाल भुज गहि चाप बिसिष सुधारि कै
चितवत मनहु मृगराज प्रभु गजराज घटा निहारि कै॥ सोरठा॥ आइ गए बगमेल धरहु
धरहु धावत सुभट॥ जथा बिलोकि अकेल बाल रबिहि घेरत दनुज॥ १८॥ प्रभु बिलोकि
सर सकहि न डारी॥ थकित भई रजनीचर धारी॥ सचिव बोलि बोले षर दूषन॥ यह कोउ १२

न्रपबालकनरभूषन॥ नागअसुरसुरनरमुनिजेते॥ देषेजितेहतेहमकेते॥ हमभरिजन्म
सुनहुसबभाई॥ देषिनहीअसिसुंदरताई॥ जद्यपिभगिनीकीन्हिकुरूपा॥ बधलायक
नहिपुरुषअनूपा॥ देहुतुरतनिजनारिदुराई॥ जीअतभवनजाहुद्वौभाई॥ मोरकहातु
म्हताहिसुनावहु॥ तासुबचनसुनिआतुरआवहु॥ दूतन्हकहारामसनजाई॥ सुनतरा
मबोलेमुसकाई॥ हमछत्रीम्रगयाबनकरहीं॥ तुम्हसेषलम्रगखोजतफिरहीं॥ रिपुब
लवंतदेषिनहिडरहीं॥ एकबारकालहुसनलरहीं॥ जद्यपिमनुजदनुजकुलघालक॥
मुनिपालकषलसालकबालक॥ जौनहोइबलघरफिरिजाहू॥ समरबिमुषमैहतौनका
हू॥ रनचढिकरियकपटचतुराई॥ रिपुपरक्रपापरमकदराई॥ दूतन्हजाइतुरतसबक
हेउ॥ सुनिषरदूषनउरअतिदहेउ॥ छंद॥ उरदहेउकहेउकिधरहुधाएबिकटभ

श्रा० ट रजनीचरा ॥ सरचापतोमर सक्ति सूल कृपान परिघ परसु धरा ॥ प्रभु कीन्ह धनुषटकोर
१२ प्रथम कठोर घोर भयावहा ॥ भए बधिर व्याकुल जातुधान न ग्यान तेहि अवसर रहा ॥ दोहा
सावधान होइ धाए जानि सबल आराति ॥ लागे बरषन राम पर अस्त्र सस्त्र बहु भांति ॥ ति
न्ह के आयुध तिल सम करि काटे रघुबीर ॥ तानि सरासन श्रवन लगि पुनि छांडे निज तीर ॥ ९
१ ॥ छंद तोमर ॥ तब चले बान कराल ॥ फुंकरत जनु बहु ब्याल ॥ कोपेउ समर श्रीराम ॥ च
ले बिसिष निसित निकाम ॥ अवलोकि खरतर तीर ॥ मुरि चले निसिचर बीर ॥ भए क्रुद्ध तीनि
उ भाइ ॥ जो भागि रन ते जाइ ॥ तेहि बधब हम निज पानि ॥ फिरे मरन मन महुं ठानि ॥ आयुध
अनेक प्रकार ॥ सनमुख ते करहिं प्रहार ॥ रिपु परम कोपे जानि ॥ प्रभु धनुष सर संधानि ॥ छां १३
डे बिपुल नाराच ॥ लगे कटन बिकट पिसाच ॥ उर सीस भुज कर चरन ॥ जहं तहं लगे महि परन

विकरतलागतवान॥धरपरतकुधरसमान॥भटकटततनसतखंड॥पुनिउठतकरिपा
षंड॥नभउडतवहुभुजमुंड॥विनुमौलिधावतरुंड॥षगकंककाकसृगाल॥कटकट
हिकठिनकराल॥छंद॥ कटकटहिजंवुकभूतप्रेतपिसाचषप्परसंचहीं॥वेतालवीरक
पालतालवजाइजोगिनिनंचहीं॥रघुवीरवानप्रचंडषंडहिभटनकेउरभुजसिरा॥जहँ
तहँपरहिउठिलरहिधरुधरुधरुकरहिभयकरगिरा॥अंतावरीगहिउडतगीधपिसाच
करगहिधावहीं॥संग्रामपुरवासीमनहुवहुवालगुडीउडावहीं॥मारेपछारेउरविदारेवि
पुलभटकहरतपरे॥अवलोकिनिजदलविकलभटतिसिरादिषरदूषनफिरे॥सरशक्ति
तोमरपरसुसूलकृपानएकहिवारहीं॥करिकोपश्रीरघुवीरपरअगिनितनिसाचरडा
रहीं॥प्रभुनिमिषमहरिपुसरनिवारिपचारिडारेसायका॥दसदसविसिषउरमांझमा

आ० १४ रे सकल निसिचर नायका॥ महि परत उठि भट भिरत मरत न करत माया अति घनी॥
सुर डरत चौदह सहस प्रेत बिलोकि एक अवध धनी॥ सुर मुनि सभय प्रभु देखि मायाना
थ अति कौतुक करयो॥ देखहि परसपर राम करि संग्राम रिपु दल लरि मरयो॥ दोहा॥ राम
राम कहि तनु तजहि पावहि पद निर्बान॥ करि उपाइ रिपु मारे छन महु कृपानिधान॥
हरषित बरषहि सुमन सुर बाजहि गगन निसान॥ अस्तुति करि करि सब चले सोभित बि
बिध बिमान॥ २०॥ जब रघुनाथ समर रिपु जीते॥ सुर नर मुनि सब के भय बीते॥ तब ल
छिमन सीतहि लै आए॥ प्रभु पद परत हरषि उर लाए॥ सीता चितव स्याम मृदु गाता॥
परम प्रेम लोचन न अघाता॥ पंचवटी बसि श्रीरघुनायक॥ करत चरित सुर मुनि सुखदा १४
यक॥ धुआं देखि खरदूषन केरा॥ जाइ सुपनखा रावन प्रेरा॥ बोली बचन क्रोध करि भारी

देस कोस कै सुरति बिसारी॥ कर असि पान सोवसि दिन राती॥ सुधि नहिं तव सिर पर आराती
राज नीति बिनु धन बिनु धर्मा॥ हरिहि समर्पें बिनु सतकर्मा॥ बिद्या बिनु बिबेक उपजाए॥
श्रम फल पढें किए अरु पाए॥ संग ते जती कुमंत्र ते राजा॥ मान ते ग्यान पान ते लाजा॥ प्रीति
प्रनय बिनु मद ते गुनी॥ नासहिं बेगि नीति अस सुनी॥ सोरठा॥ रिपु रुज पावक पाप प्रभु
अहि गनिअ न छोट करि॥ अस कहि बिबिध बिलाप करि लागी रोदन करन॥ दोहा॥: सभा
माझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कह रोइ॥ तोहि जियत दसकंधर मोरि कि असि गति होइ॥ २१
सुनत सभासद उठे अकुलाई॥ समुझाई गहि बांह उठाई॥ कह लंकेस कहसि निज बाता॥
केइं तव नासा कान निपाता॥ अवध नृपति दसरथ के जाए॥ पुरुष सिंह बन खेलन आ
ए॥ समुझि परी मोहि उन्ह कै करनी॥ रहित निसाचर करिहहिं धरनी॥ जिन्ह कर भुजब

भ

आ० १५ लपाइ दसानन॥ अभय भयें बिचरत मुनि कानन॥ देषत बालक काल समाना॥ परम धी
र धन्वी गुन नाना॥ अतुलित बल प्रताप द्वौ भ्राता॥ षल बध रत सुर मुनि सुषदाता॥ सो
भा धाम राम अस नामा॥ तिन्ह के संग नारि एक स्यामा॥ रूप रासि बिधि नारि सवारी॥ रति
सत कोटि तासु बलिहारी॥ तासु अनुज काटे श्रुति नासा॥ सुनि तव भगिनि करहि परिहा
सा॥ षर दूषन सुनि लगे पुकारा॥ छन महु सकल कटक उन्ह मारा॥ षर दूषन तिसिरा के
र घाता॥ सुनि दससीस जरे सब गाता॥ दोहा॥ सूपनषहि समुझाइ करि बल बोलेसि बहु
भाँति॥ गएउ भवन अति सोच बस नींद परै नहि राति॥ १२॥ सुर नर असुर नाग षग माहीं॥
मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं॥ षर दूषन मोहि सम बलवंता॥ तिन्हहि को मारै बिनु भगव
ता॥ सुर रंजन भंजन महि भारा॥ जौं भगवंत कीन्ह अवतारा॥ तौ मैं जाइ बैरु हठि करऊँ॥ १५

प्रभुसरप्राननतजेभवतरऊँ॥होइहिभजनुनतामसदेहा॥मनक्रमवचनमंत्रदृढएहा॥
जौनररूपभूपसुतकोऊ॥हरिहौनारिजीतिरनदोऊ॥चलाअकेलजानचढितहवाँ॥बस
मारीचसिंधुतटजहवाँ॥इहाँरामजसिजुगुतिबनाई॥सुनहुउमासोकथासुहाई॥दोहा॥
लछिमनगएबनहिजबलेनमूलफलकंद॥जनकसुतासनबोलेबिहसिकृपासुखबृंद
२३॥सुनहुप्रियाब्रतरुचिरसुसीला॥मैंकछुकरबललितनरलीला॥तुम्हपावकमहुँकरहु
निवासा॥जौलगिकरौंनिसाचरनासा॥जबहिरामसबकहाबखानी॥प्रभुपदधरिहियअ
नलसमानी॥निजप्रतिबिंबराखितहँसीता॥तैसइरूपसीलसुबिनीता॥लछिमनहूयहम
रमुनजाना॥जोकछुचरितरचाभगवाना॥दसमुखगएउजहाँमारीचा॥नाइमाथस्वारथर
तनीचा॥नवनिनीचकैअतिदुखदाई॥जिमिअंकुसधनुउरगबिलाई॥भयदायकखलके

प्रियवानी॥ जिमिभ्रमकालकेकुसुमभवानी॥ दोहा॥: करिपूजामारीचतवसादरपूछीवात
श्री ९९ कवनहेतुमनव्यग्रअतिअकसरआएहुतात॥२४॥ दसमुखसकलकथातेहिआगे॥ कही
सहितअभिमानअभागे॥ होहुकपटमृगतुम्हछलकारी॥ जेहिविधिहरिआनौनृपना
री॥ तेहिपुनिकहासुनहुदससीसा॥ तेनररूपचराचरईसा॥ तासोतातवयरुनहिकीजे॥ मा
रेमरियजियारजीजे॥ मुनिमखराखनगएउकुमारा॥ विनुफरसररघुपतिमोहिमारा॥ सतजो
जनआएउछनमांही॥ तिन्हसनवयरुकिएभलनाही॥ भइममकीटभृंगकीनाई॥ ज
हंतहंमैदेखौदोउभाई॥ जौनरतातदपिअतिसूरा॥ तिन्हहिविरोधिनआइहिपूरा॥
दोहा॥: जेहिताडकासुवाहुहतिखंडेउहरकोदंड॥ खरदूषनतिसिरावधेउमनुजकिअस ९९
वरिवंड॥२५॥ जाहुभवनकुलकुसलविचारी॥ सुनतजरादीन्हिसिवहुगारी॥ गुरुजिमिमू-

ठकरसिममबोधा॥कहुजगमोहिसमानकोजोधा॥नवमारीचहृदयअनुमाना॥नवहि
बिरोधेनहिकल्याना॥शस्त्रीमर्मीप्रभुसठधनी॥वैदवंदिकबिमानसगुनी॥उभयभांति
देषानिजमरना॥नवताकेसिरघुनायकसरना॥उतरुदेतमोहिबधबअभागे॥कसनम
रौरघुपतिसरलागे॥असजियजानिदशाननसंगा॥चलारामपदप्रेमअभंगा॥मनअ
तिहरषजनावननेही॥आजुदेषिहौंपरमसनेही॥छंद॥ निजपरमप्रीतमदेषिलो
चनसुफलकरिसुषपाइहौं॥श्रीसहितअनुजसमेतकृपानिकेतपदमनलाइहौं॥नि
र्वानदायकक्रोधजाकरभगतिअवसहिवसकरी॥निजपानिसरसंधानिसोमोहिव
धिहिसुषसागरहरी॥दोहा॥ममपाछेधरधावतधरेसरासनवान॥फिरिफिरिप्रभु
हिविलोकिहौंधन्यनमोसमआन॥२६॥नेहिवननिकटदसाननगयऊ॥नवमारी

आ० १७ चकपटम्रगाभएउ॥अतिबिचित्रकछुबरनिनजाई॥कनकदेहमनिरचितबनाई॥
सीतापरमरुचिरम्रगदेषा॥अंगअंगसुमनोहरबेषा॥सुनहुदेवरघुबीरक्रपाला॥
यहम्रगकरअतिसुंदरछाला॥सत्यसंधप्रभुबधकरियेही॥आनहुचर्मकहतिबैदेही॥
तबरघुपतिजानतसबकारन॥उठेहरषिसुरकाजसवारन॥म्रगबिलोकिकटिपरिक
रबांधा॥करतलचापरुचिरसरसांधा॥प्रभुलछिमनहिकहासमुझाई॥फिरतबिपिन
निसिचरबहुभाई॥सीताकेरिकरेहुरषवारी॥बुधिबिवेकबलसमयबिचारी॥प्रभुहि
बिलोकिचलाम्रगभाजी॥धाएरामसरासनसाजी॥निगमनेतिशिवध्याननपावा॥मा
याम्रगपाछेंसोधावा॥कबहुनिकटपुनिदूरिपराई॥कबहुकप्रगटैकबहुछपाई॥प्र १७
गटतदुरतकरतछलभूरी॥एहिबिधिप्रभुहिगयेलैदूरी॥तबतकिरामकठिनसरमा

रा॥ धरनि परेउ करि घोर पुकारा॥ लछिमन के प्रथमहि लै नामा॥ पाछे सुमिरेसि मन
महु रामा॥ प्रान तजत प्रगटेसि निज देहा॥ सुमिरेसि रामु समेत सनेहा॥ अंतर प्रेम तासु
पहिचाना॥ मुनि दुर्लभ गति दीन्हि सुजाना॥ दोहा॥ बिपुल सुमन सुर बरषहि गाव
हि प्रभु गुन गाथ॥ निज पद दीन्ह असुरकुह दीनबंधु रघुनाथ॥ २७॥ खल बधि तुरत फिरे
रघुबीरा॥ सोह चाप कर कटि तूनीरा॥ आरत गिरा सुनी जब सीता॥ कह लछिमन सन पर
म सभीता॥ जाहु बेगि संकट अति भ्राता॥ लछिमन बिहसि कहा सुनु माता॥ भृकुटि बिला
स सृष्टि लय होई॥ सपनेहु संकट परै कि सोई॥ मरम बचन जब सीता बोला॥ हरि प्रेरित
लछिमन मन डोला॥ बन दिसि देव सौपि सब काहू॥ चले जहां रावन ससि राहू॥ सून बी
च दसकंधर देखा॥ आवा निकट जती के बेषा॥ जाके डर सुर असुर डेराहीं॥ निसि न नींद

आ० दिन्अनन्तनयाहोहीं॥सोदससीसस्वानकीनाईं॥इतउतचितइचलाभड़िहाईं॥इमिकु
१८ न पंथपगदेतषगेसा॥रहनतेजतनबुधिबललेसा॥नानाविधिकहिकथासोहाईं॥राजनी
तिभयप्रीतिदेषाई॥कहसीतासुनुजतीगोसाईं॥बोलेहुबचनदुष्टकीनाईं॥तबरावन
निजरूपदेषावा॥भईसभयजबनामसुनावा॥कहसीताधरिधीरजुगाढा॥आइगएउ
प्रभुरहुषलठाढा॥जिमिहरिवधुहिछुद्रससचाहा॥भयसिकालवसनिसिचरनाहा॥
सुनतबचनदससीसरिसाना॥मनमहुचरनबंदिसुषमाना॥दोहा॥ क्रोधवंततबराव
नलीन्हेसिरथबैठाइ॥चलागगनपथआतुरभयरथहांकिनजाइ॥२८॥हाजगएकवी
रघुराया॥केहिअपराधविसारेहुदाया॥आरतहरनसरनसुषदायक॥हारघुकुलस १८
रोजदिननायक॥हालछिमनतुम्हारनहिदोसा॥सोफलपाएउकीन्हेउरोसा॥विवि

धर्म्मबिलापकरतिबैदेही॥ भूरिकृपाप्रभुदूरिसनेही॥ बिपतिमोरिकोप्रभुहिसुनावा॥ पुरो
डासचहरासभखावा॥ सीताकेबिलापसुनिभारी॥ भएचराचरजीवदुखारी॥ गीधराजसु
निआरतबानी॥ रघुकुलतिलकनारिपहिचानी॥ अधमनिसाचरलीन्हेजाई॥ जिमिमले
छबसकपिलागाई॥ सीतेपुत्रिकरसिजनित्रासा॥ करिहौंजातुधानकरनासा॥ धावाक्रोध
वंतखगकैसे॥ छूटैपविपर्वतकहुजैसे॥ रेरेदुष्टठाढकिनहोही॥ निर्भयचलसिनजानेहि
मोही॥ आवतदेखिकृतांतसमाना॥ फिरिदसकंधरकरअनुमाना॥ कीमैनाककिखगप
तिहोई॥ ममबलजानसहितपतिसोई॥ जानाजरठजटायूयेहा॥ ममकरतीरथछाडि
हिदेहा॥ सुनतगीधक्रोधातुरधावा॥ कहसुनुरावनमोरसिखावा॥ तजिजानहिकुसलगृ कि
हजाहू॥ नाहितअसहोइहिबहुबाहू॥ रामरोषपावकअतिघोरा॥ होइहिसकलसलभ

श्री० कुलनासा॥ उतरु न देत दसानन जोधा॥ तबहिं गीध धावा करि क्रोधा॥ धरि कच बिरथ कीन्ह
१८ महि गिरा॥ सीतहि राखि गीध पुनि फिरा॥ चोंचन मारि बिदारेसि देही॥ दंड एक भइ मुरछा
तेही॥ तब सक्रोध निसिचर खिसिआना॥ काढेसि परम कराल क्रपाना॥ काटेसि पंख परा खग
धरनी॥ सुमिरि राम करि अद्भुत करनी॥ सीतहि जान चढाइ बहोरी॥ चला उताइल त्रास
न थोरी॥ करति बिलाप जाति नभ सीता॥ ब्याध बिबस जनु म्रगी सभीता॥ गिरि पर बैठे
कपिन्ह निहारी॥ कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी॥ एहि बिधि सीतहि सो लै गएऊ॥ बन
असोक महं राखत भए ऊ॥ दोहा॥ हारि परा खल बहु बिधि भय अरु प्रीति देखाइ॥ तब
असोक पादप तर राखेसि जतन कराइ॥ जेहि बिधि कपट कुरंग संग धाइ चले श्रीराम॥ १८
सो छबि सीता राखि उर रटति रहति हरिनाम॥ २८॥ रघुपति अनुजहि आवत देखी॥ बा

द्विजचिंताकीन्हिविशेषी॥जनकसुतापरिहरिउअकेली॥आएहुतातवचनममपेली
निसिचरनिकरफिरहिंवनमाहीं॥मममनसीताआश्रमनाहीं॥गहिपदकमलअनुजकर
जोरी॥कहेउनाथकछुमोहिनषोरी॥अनुजसमेतगएप्रभुतहवां॥गोदावरितटआश्रम
जहवां॥आश्रमदेषिजानकीहीना॥भएविकलजसप्राकृतदीना॥हागुनषानिजानकी
सीता॥रूपसीलव्रतनेमपुनीता॥लछिमनसमुझाएवहुभांती॥पूछतचलेलतातरुपा
ती॥हेषगमृगहेमधुकरश्रेनी॥तुम्हदेषीसीतामृगनेनी॥षंजनसुककपोतमृगमीना॥
मधुपनिकरकोकिलाप्रवीना॥कुंदकलीदाडिमदामिनी॥कमलसरदससिअहिभामि
नी॥वरुनपासमनोजधनुहंसा॥गजकेहरिनिजसुनतप्रसंसा॥श्रीफलकनककदलि
हरषाहीं॥नेकुनसंकसकुचमनमाहीं॥सुनुजानकीतोहिविनुआजू॥हरषेसकलपा

आ० इजनुराजा॥ किमिसहिजातअनषतोहिपाहीं॥ प्रियाबेगिप्रगटसिकसनाहीं॥ एहिबि
३० धिषोजतबिलपतस्वामी॥ मनहुमहाबिरहीअतिकामी॥ पूरनकामरामसुषरासी॥ म
नुजचरितकरअजअबिनासी॥ आगेंपरागीधपतिदेषा॥ सुमिरतरामचरनजिन्हरेषा॥
दोहा॥: करसरोजसिरपरसेउकृपासिंधुरघुबीर॥ निरषिरामछबिधाममुषबिगतभ
ईसबपीर॥३०॥ तबकहगीधबचनधरिधीरा॥ सुनहुरामभंजनभवभीरा॥ नाथदसान
नयहगतिकीन्ही॥ तेहिंषलजनकसुताहरिलीन्ही॥ लैदक्षिनदिसिगयउगोसाईं॥
बिलपतिअतिकुररीकीनाईं॥ दरसलागिप्रभुराषेउप्राना॥ चलनचहतअबकृपानि
धाना॥ रामकहातनुराषहुताता॥ मुषमुसकाइकहीतेहिबाता॥ जाकरनाममरतमुष ३०
आवा॥ अधमोमुक्तिहोइश्रुतिगावा॥ सोममलोचनगोचरआगे॥ राषौंदेहनाथकेहि

पागे॥जलभरिनयनकहहिरघुराई॥ताथकर्मनिजतेगतिपाई॥परहितबसजिन्हके
मनमाही॥तिन्हकहुजगदुर्लभकछुनाही॥तनुतजितातजाहुममधामा॥देउंकाहतु
म्हपूरनकामा॥दोहा॥सीताहरनतातजनिकहहुपितासनजाइ॥जौमैरामतकुलस
हितकहिहिदसाननआइ॥३१॥गीधदेहतजिधरिहरिरूपा॥भूषनबहुपटपीतअनू
पा॥स्यामगातबिसालभुजचारी॥अस्तुतिकरतनयनभरिबारी॥छंद॥जयरामरूपअ
नूपनिर्गुनसगुनगुनप्रेरकसही॥दससीसबाहुप्रचंडषंडनचंडसरमंडनमही॥पा
थोदगातसरोजमुषराजीवआयतलोचनं॥नितनौमिरामकृपालबाहुबिसालभव
भयमोचनं॥बलमप्रमेयमनादिमजमव्यक्तमेकमगोचरं॥गोविंदगोपरद्वंदहरवि
ज्ञानघनधरनीधरं॥जेराममंत्रजपंतिसंतअनंतजनमनरंजनं॥नितनौमिरामअ

आ०
२१ कामप्रियकामादिषलदलगंजनं॥ जेहिस्रुतिनिरंजनब्रह्मब्यापकविरजअजकहि
गावहीं॥ करिध्यानज्ञानविरागजोगअनेकमुनिजेहिपावहीं॥ सोप्रगटकरुनाकंदसो
भाव्रंदअगजगमोहई॥ ममहृदयपंकजभृंगअंगअनंगवहुछविसोहई॥ जोअगम
सुगमसुभावनिर्मलअसमसमसीतलसदा॥ पश्यंतियंजोगीजतनुकरिकरतमनगोवस
सदा॥ सोरामरमानिवाससंततदासवसत्रिभुवनधनी॥ ममउरवसउसोसमनसंसृतिजा
सुकीरतिपावनी॥ दोहा॥ अविरलभगतिमागिवरगीधगएउहरिधाम॥ तेहिकीक्रियाज
थोचितनिजकरकीन्हीराम॥ ३१॥ कोमलचितअतिदीनदयाला॥ कारनविनुरघुनाथ
कृपाला॥ गीधअधमखगआमिषभोगी॥ गतिदीन्हीजोजाचतजोगी॥ सुनहुउमातेलो २१
गअभागी॥ हरितजिहोहिंविषयअनुरागी॥ पुनिसीतहिखोजतद्वौभाई॥ चलेविलोक

वन

तबहुताई॥ संकुललताबिटपघनकानन॥ बहुषगम्रगतहँगजपंचानन॥ आवतपंथ
कबंधनिपाता॥ तेहिसबकहीसापकैबाता॥ दुर्बासामोहिदीन्हीसापा॥ प्रभुपदपेषिमिटा
सोपापा॥ सुनुगंधर्बकहौमैतोही॥ मोहिनसोहाइब्रह्मकुलद्रोही॥ दोहा॥ मनक्रमबच
नकपटतजिजोकरभूसुरसेव॥ मोहिसमेतबिरंचिसिवबसताकेसबदेव॥ ३३॥ सापतता
डतपरुषकहंता॥ बिप्रपूज्यअसगावहिसंता॥ पूजियबिप्रसीलगुनहीना॥ सूद्रनगुनग
नग्यानप्रबीना॥ कहिनिजधर्मताहिसमुझावा॥ निजपदप्रीतिदेषिमनभावा॥ रघुपति
चरनकमलसिरुनाई॥ गयउगगनआपनिगतिपाई॥ ताहिदेइगतिरामउदारा॥ स
वरीकेआश्रमपगुधारा॥ सवरीदेषिरामग्रहआए॥ मुनिकेबचनसमुझिजियभाए॥ स
रसिजलोचनबाहुबिसाला॥ जटामुकुटसिरउरबनमाला॥ स्यामगौरसुंदरदोउभाई

आ० सबरीपरीचरनलपटाई॥प्रेममगनमुषबचननआवा॥पुनिपुनिपदसरोजसिरना
२२ वा॥सादरजललैचरनपषारे॥पुनिसुंदरआसनबैठारे॥दोहा॥ कंदमूलफलसुरस
अतिदिएरामकहुआनि॥प्रेमसहितप्रभुषाएबारंबारबषानि॥३४॥पानिजोरिआगे
भइठाढी॥प्रभुहिबिलोकिप्रीतिअतिबाढी॥केहिबिधिअस्तुतिकरौंतुम्हारी॥अधमजा
तिमैंजडमतिभारी॥अधमतेअधमअधमअतिनारी॥तिन्हमहमैंमतिमंदअघारी
कहरघुपतिसुनुभामिनिबाता॥मानौंएकभगतिकरनाता॥जातिपातिकुलधर्मबडा
ई॥धनबलपरिजनगुनचतुराई॥भगतिहीननरसोहैकैसा॥बिनुजलबारिददेषियजै
सा॥नवधाभगतिकहौंतोहिपाहीं॥सावधानसुनुधरुमनमाहीं॥प्रथमभगतिसंत २२
न्हकरसंगा॥दूसरिरतिममकथाप्रसंगा॥दोहा॥गुरुपदपंकजसेवातीसरिभगतिअ

मान॥ चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान॥३५॥ मंत्र जाप मम दृढ बिस्वासा॥ पं
चम भजन सो वेद प्रकासा॥ छठ दम सील बिरति बहु कर्मा॥ निरत निरंतर सज्जन धर्मा॥ सा
तव सम मोहि मय जग देषा॥ मोते संत अधिक करि लेषा॥ आठव जथालाभ संतोषा॥ सप
नेहु नहि देषइ परदोषा॥ नवम सरल सब सन छलहीना॥ मम भरोस हिय हरष न दीना॥
नव महु एको जिन्ह के होई॥ नारि पुरुष सचराचर कोई॥ सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे॥
सकल प्रकार भगति दृढ तोरे॥ जोगि बृंद दुर्लभ गति जोई॥ तो कहु आजु सुलभ भइ सोई॥
मम दरसन फल परम अनूपा॥ जीव पाव निज सहज सरूपा॥ जनक सुता कै सुधि भामिनी
जानहि कहु करिबर गामिनी॥ पंपा सरहि जाहु रघुराई॥ तहं होइहि सुग्रीव मिताई॥ सो सब
कहिहि देव रघुबीरा॥ जानतहू पूछहु मति धीरा॥ बारबार प्रभु पद सिरु नाई॥ प्रेम सहित स

आ० वकथासुनाई॥छंद॥ः कहिकथासकलविलोकिहरिमुषहृदयपदपंकजधरे॥तजिजो
२३ गपावककेदेहहरिपदलीनभैजहँनहिंफिरे॥नरविविधकर्मअधर्मवहुमतसोकप्रदसवत्या
गहु॥विस्वासकरिकहदासतुलसीरामपदअनुरागहु॥दोहा॥ जातिहीनअघजन्ममहि
मुक्तकीन्हिअसिनारि॥महामंदमनसुषचहसिऐसेप्रभुहिविसारि॥३६॥चलेरामत्यागा
वनसोऊ॥अतुलितवलनरकेहरिदोऊ॥विरहीइवप्रभुकरतविषादा॥कहतकथाअने
कसंवादा॥लछिमनदेषुविपिनकैसोभा॥देषतकेहिकरमननहिछोभा॥नारिसहितस
वषगमृगवृंदा॥मानहुमोरिकरतहहिनिंदा॥हमहिदेषिमृगनिकरपराहीं॥मृगीकह
हितुम्हकहभयनाहीं॥तुम्हआनंदकरहुमृगजाए॥कंचनमृगषोजनएआए॥संगला
इकरिनीकरिलेहीं॥मानहुमोहिसिषावनुदेहीं॥शास्त्रसुचिंतितपुनिपुनिदेषिय॥भूपसु २३

सेवित बसन हिलेषिय ॥ रा षिय नारि जदपि उर माहीं ॥ जुवती शास्त्र न्रपति बस नाहीं ॥ देष
हु तात बसंत सोहावा ॥ प्रिया हीन मोहि भय उपजावा ॥ दोहा ॥ बिरह बिकल बल हीन मो
हि जानेसि निपट अकेल ॥ सहित बिपिन मधुकर षग मदन कीन्ह बगमेल ॥ देषि गएउ भ्रा
ता सहित तासु दूत सुनि बात ॥ डेरा कीन्हेउ मनहु तब कटकु हटकि मनजात ॥ ३७ ॥ बिटप बि
साल लता अरुझानी ॥ बिबिध बितान दिए जनु तानी ॥ कदलि ताल बर ध्वजा पताका ॥ देषि न
मोह धीर मन जाका ॥ बिबिध भांति फूले तरु नाना ॥ जनु बानैत बने बहु बाना ॥ कहुं कहुं सुंदर
बिटप सुहाए ॥ जनु भट बिलग बिलग होइ छाए ॥ कुंजत पिक मानहु गज माते ॥ ढेक महोष उ
ठ बिसराते ॥ मोर चकोर कीर बर बाजी ॥ पारावत मराल सब ताजी ॥ तीतर लावक पदचर जूथा
बरनि न जाइ मनोज बरूथा ॥ रथ गिरि सिला दुंदुभी झरना ॥ चातक बंदी गुन गन बरना ॥ म

आ० २४ धुकर मुषर भेरि सहनाई॥ त्रिविध वयारि वसीठी आई॥ चतुरंगिनी सेन संग लीन्हे॥ विचरत स
वहि चुनौती दीन्हे॥ लछिमन देषत काम अनीका॥ रहहिं धीर तिन्ह के जग लीका॥ एहि के ए
क परम बल नारी॥ तेहि ते उबर सुभट सोइ भारी॥ दोहा॥ तात तीनि अति प्रबल षल काम
क्रोध अरु लोभ॥ मुनि विज्ञान धाम मन करहिं निमिष महु छोभ॥ लोभ के इछा दंभ बल का
म के केवल नारि॥ क्रोध के परुष वचन बल मुनिवर कहहिं विचारि॥ ३८॥ गुनातीत सचराच
र स्वामी॥ राम उमा सब अंतरजामी॥ कामिन्ह के दीनता देषाई॥ धीरन्ह के मन विरति दृढा
ई॥ क्रोध मनोज लोभ मद माया॥ छूटहि सकल राम की दाया॥ सो नर इंद्रजाल नहि भूला॥
जा पर होइ सो नट अनुकूला॥ उमा कहौ मै अनुभव अपना॥ सत हरि भजनु जगत सब २४
सपना॥ पुनि प्रभु गए सरोवर तीरा॥ पंपा नाम सुभग गंभीरा॥ संत हृदय जस निर्मल वारी॥

वाँधे घाट मनोहर चारी॥ जहँ तहँ पियहिं विविध मृग नीरा॥ जनु उदार गृह जाचक भी
रा॥ दोहा॥ पुरइनि सघन ओट जल वेगि न पाइय मर्म॥ माया छन्न न देखियै जैसे नि
र्गुन ब्रह्म॥ सुखी मीन सब एक रस अति अगाध जल माहिं॥ जथा धर्मसीलन्ह के दिन सु
ख संजुत जाहिं॥ ३५॥ विकसे सरसिज नाना रंगा॥ मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा॥ बोलत ज
लकुक्कुट कलहंसा॥ प्रभु विलोकि जनु करत प्रसंसा॥ चक्रवाक बक खग समुदाई॥ देख
त वनइ वरनि नहिं जाई॥ सुंदर खग गन गिरा सुहाई॥ जात पथिक जनु लेत वोलाई॥ ताल
समीप मुनिन्ह गृह छाए॥ चहु दिसि कानन विटप सोहाए॥ चंपक वकुल कदंब तमाला॥
पाटल पनस परास रसाला॥ नव पल्लव कुसुमित तरु नाना॥ चंचरीक पटली कर गाना॥ सी
तल मंद सुगंध सुभाऊ॥ संतत वहै मनोहर वाऊ॥ कुहू कुहू कोकिल धुनि करहीं॥ सुनि

आ०
२५
खसरसध्यानमुनिदरहीं॥दोहा॥फूलभरनमनविटपसवरहेभूमिनियराइ॥पर उपका
रीपुरुषजिमिनवहिंसुसंपतिपाइ॥४०॥देषिरामअतिरुचिरतलावा॥मज्जनकीन्हप
रमसुषपावा॥देषीसुंदरतरुवरछाया॥वैठेअनुजसहितरघुराया॥तहँपुनिसकलदेव
मुनिआए॥अस्तुतिकरिनिजधामसिधाए॥वैठेपरमप्रसन्नकृपाला॥कहतअनुज
सनकथारसाला॥विरहवंतभगवंतहिदेषी॥नारदमनभासोचविशेषी॥मोरसापक
रिअंगीकारा॥सहतरामनानादुषभारा॥असप्रभुहिविलोकोंजाई॥पुनिनवनिहि
असअवसरआई॥यहविचारिनारदकरवीना॥गएजहाँप्रभुसुषआसीना॥गावतरा
मचरितमृदुवानी॥प्रेमसहितवहुभाँतिवषानी॥करतदंडवतलिएउठाई॥राषेवहु २५
तिवारउरलाई॥स्वागतपूछिनिकटवैठारे॥लछिमनसादरचरनपषारे॥दोहा॥:

नानाविधिविनतीकरिप्रभुप्रसन्नजियजानि॥नारदवोलेवचनतवजोरिसरोरुह
पानि॥४१॥सुनहुउदारपरमरघुनायक॥सुंदरअगमसुगमवरदायक॥देहुएकव
रमागौस्वामी॥जद्यपिजानतअंतरजामी॥जानहुमुनितुम्हमोरसुभाउ॥जनसनक
वहुकिकरौंदुराउ॥कवनवस्तुअसिप्रियमोहिलागी॥जोमुनिवरनसकहुतुम्हमागी
जनकहुकछुअदेयनहिमोरे॥असविस्वासतजहुजनिभोरे॥तवनारदवोलेहरषाई
असवरमागौकरौढिठाई॥जद्यपिप्रभुकेनामअनेका॥श्रुतिकहअधिकएकतेएका
रामसकलनामन्हतेअधिका॥होउनाथअघखगगनवधिका॥दोहा॥राकारज
नीभगतितवरामनामसोइसोम॥अपरनामउडगनविमलवसहुभगतउरव्योम
एवमस्तुमुनिसनकहेउकृपासिंधुरघुनाथ॥तवनारदमनहरषअतिप्रभुपदनाइ

आ० ५६ उमाय॥४२॥ अतिप्रसन्नरघुनाथहिजानी॥ पुनिनारदबोलेम्रदुबानी॥ रामजबहिप्रे
रेउनिजमाया॥ मोहेहुमोहिसुनहुरघुराया॥ तवविवाहमैचाहउँकीन्हा॥ प्रभुकेहि
कारनकरैनदीन्हा॥ सुनुमुनितोहिकहौंसहरोसा॥ भजहिजेमोहितजिसकलभरोसा॥
करौसदातिन्हकैरखवारी॥ जिमिबालकहिराखमहतारी॥ गहिसिसुबछअनलअहि
धाई॥ तहँराखैजननीअरगाई॥ प्रौढभएतेहिसुतपरमाता॥ प्रीतिकरैनहिपाछिलिबा
ता॥ मोरेप्रौढतनयसमज्ञानी॥ वालकसुतसमदासअमानी॥ जनहिमोरबलनिजबलता
ही॥ दुहुकहुकामक्रोधरिपुआही॥ यहविचारिपंडितमोहिभजहीं॥ पाएहुज्ञानभगति
नहितजहीं॥ दोहा॥ कामक्रोधलोभादिमदप्रबलमोहकैधारि॥ तिन्हमहअतिदारु ५६
नदुषदमायारूपीनारि॥४३॥ सुनुमुनिकहपुरानश्रुतिसंता॥ मोहविपिनकहुनारिब

संता॥जपतपनेमजलाश्रयझारी॥होइग्रीषमसोषैसबनारी॥कामक्रोधमदमत्सरभे
का॥इन्हहिहरषप्रदबरषाएका॥दुर्बासनाकुमुदसमुदाई॥तिन्हकहँसरदसदासुख
दाई॥धर्मसकलसरसीरुहबृंदा॥होइहिमतिन्हहिदहैसुखमंदा॥पुनिममताजवासबहु
ताई॥पलुहइनारिसिसिररितुपाई॥पापउलूकनिकरसुखकारी॥नारिनिबिडरजनी
अँधिआरी॥बुधिबलसीलसत्यसबमीना॥बनसीसमत्रियकहहिंप्रबीना॥दोहा॥अव
गुनमूलसूलप्रदप्रमदासबदुखखानि॥तातेकीन्हनिवारनमुनिमैंयहजियजानि॥४४
सुनिरघुपतिकेबचनसुहाए॥मुनितनपुलकनयनभरिआए॥कहहुकवनप्रभुकैअ
सिरीती॥सेवकपरममताअरुप्रीती॥जेनभजहिंअसप्रभुभ्रमत्यागी॥ग्यानरंकनरमंद
अभागी॥पुनिसादरबोलेमुनिनारद॥सुनहुरामबिग्यानबिसारद॥संतन्हकेलक्षनरघु

आ० ५७ वीरा॥कहहुनाथभवभंजनभीरा॥सुनुमुनिसंतन्हकेगुनकहऊँ॥जिन्हतेंमेउन्हकेंवस
रहऊँ॥षटविकारजितअनघअकामा॥अचलअकिंचनसुचिसुखधामा॥अमितवोधअनी
हमितभोगी॥सत्यसंधकविकोविदजोगी॥सावधानमानदमदहीना॥धीरधर्मगतिपरम
प्रवीना॥दोहा॥गुनागारसंसारदुखरहितविगतसंदेह॥तजिममचरनसरोजप्रियतिन्हक
हुँदेहनगेह॥४५॥निजगुनश्रवनसुनतसकुचाहीं॥परगुनसुनतअधिकहरषाहीं॥समसी
तलनहित्यागहिनीती॥सरलसुभाउसवहिसनप्रीती॥जपतपव्रतदमसंजमनेमा॥गुरुगो
विंदविप्रपदप्रेमा॥श्रद्धाछमामयत्रीदाया॥मुदितामममपदप्रीतिअमाया॥विरतिविवेक
विनेविज्ञाना॥वोधजथारथवेदपुराना॥दंभमानमदकरहिनकाऊ॥भूलिनदेहिकुमार ५७
गपाऊ॥गावहिसुनहिसदाममलीला॥हेतुरहितपरहितरतसीला॥मुनिसुनुसाधनके

आ० ५८ गुनजेते॥ कहिनसकैंसारदश्रुतितेते॥ छंद॥: कहिसकनसारदसेषनारदमुनततपदपं
कजगहे॥ श्रसदीनवंधुकृपालश्रपनेभक्तगुननिजमुषकहे॥ सिरुनाइवारहिवारचरन
न्हिब्रह्मपुरनारदगए॥ तेधन्यतुलसीदासश्रासविहाइजेहरिरंगरए॥ दोहा॥: एकनारि
जसपावनगावहिंमुनहिंजेलोग॥ रामभगतिदृढपावहिंविनुविरागजपजोग॥ दीपसिषा
सम्मजुवतीमनजनिहोसिपतंग॥ भजहिरामतजिकाममदकरहिसदासतसंग॥ ४६॥ इ
तिश्रीरामचरितमानसेसकलकलिकलुषविध्वंसनेविमलवैराग्यसंपादनोनामतृतीयःसोपानः॥ श्रारन्यपूर्णम॥ शुभमस्तुसंवत॥ १८८० माघकृष्णअष्टम्यां॥ ८॥ ०

लि० सजीवनलाल ९

रामायणेऽरण्यकांडः समाप्तः